मुख्य धर्म क्या है?
अपने मन बुद्धि और
इन्द्रियों सहित शरीर को
ॐ आनन्दमय प्रभु पिता
के आज्ञाकारी बनाए
रखना।
(श्री गीता अ० 5 श्लोक 10 से 12)

धर्म का फल क्या है?
अमृतमय-ध्यानयोग
की मग्नता और आनन्दमय
शान्तिमय ब्रह्मपद युक्त
सुहृदता-समता तथा
प्रियता-प्रसन्नता।
(पद दायक विधानधारा श्री गीता
अ० 2 श्लोक 51 और 15/5 आदि में)

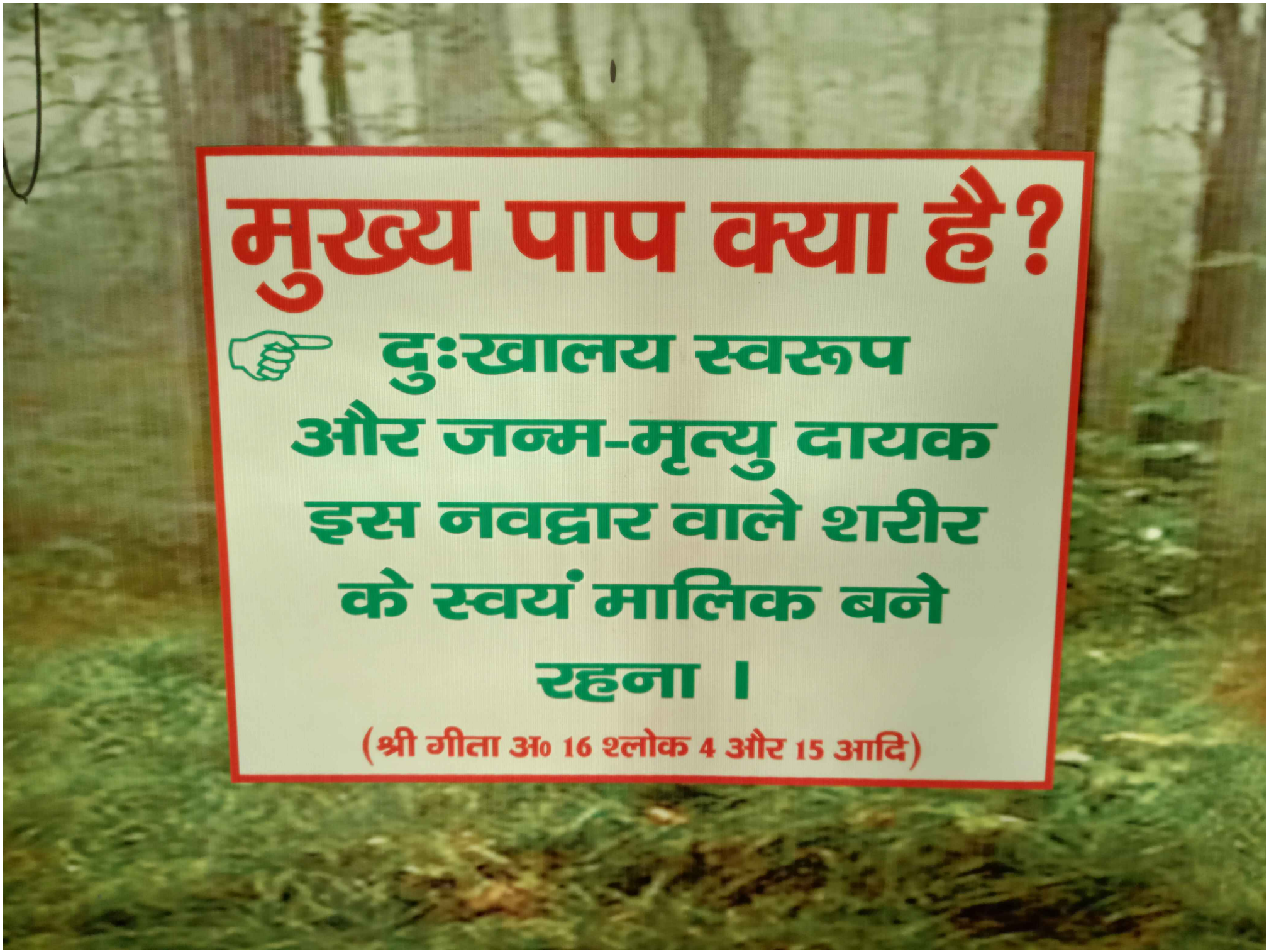
मुख्य पाप क्या है?
दुःखालय स्वरूप
और जन्म-मृत्यु दायक
इस नवद्वार वाले शरीर
के स्वयं मालिक बने
रहना ।
(श्री गीता अ० 16 श्लोक 4 और 15 आदि)

पापों का दण्ड क्या है?
चिन्ता नाराज़गी क्रोधमय
और रूदनमय अर्थात्
जीवन को कलह-क्लेश युक्त
दुखःमय-अशान्तिमय
बनाते रहते हैं ।
(दण्ड-दायक विधान धारा-श्री गीता
अ० 16 श्लोक 11 और अ० 18 श्लोक 35 आदि में)